

राष्ट्रकूट

राष्ट्रकूट कौन थे?

- राष्ट्रकूट साम्राज्य ने 10वीं शताब्दी के अंत तक लगभग 200 वर्षों तक दक्कन पर प्रभुत्व जमाया और विभिन्न समयों पर उत्तर और दक्षिण भारत के क्षेत्रों पर भी नियंत्रण किया।
- यह न केवल उस समय की सबसे शक्तिशाली राजनीतिक सत्ता थी बल्कि आर्थिक और सांस्कृतिक मामलों में उत्तर और दक्षिण भारत के बीच एक सेतु के रूप में भी कार्य करती थी।
- इसने दक्षिण भारत में उत्तर भारतीय परंपराओं और नीतियों को बढ़ावा और वसितार दिया।
- गौरतलब है कि भारत ने राजनीति, अर्थव्यवस्था, संस्कृति, शिक्षा और धर्म के क्षेत्र में स्थिरता और उपलब्धियों की नई ऊंचाइयों को छुआ।
- उत्तरी भारत में ऐसी कोई शक्ति नहीं थी जो दक्कन के मामलों में हस्तक्षेप कर सके। इसने राष्ट्रकूटों के उद्भव के लिये एक अवसर प्रदान किया।

राष्ट्रकूटों की राजनीतिक्रिया थी?

- प्रारंभिक मध्यकाल में भारत के विभिन्न हिस्सों में शासन करने वाले राष्ट्रकूटों की कई शाखाएँ थीं।
- राष्ट्रकूटों के सबसे पहले ज्ञात शासक परिवार की स्थापना मालखेड में मन्नक द्वारा की गई थी, जिसमें पलधिवज बैनर (ध्वज) और गुरुड-लंछना (पक्षी प्रतीक) थे।
- मध्य प्रदेश के बैतूल जिले में एक और राष्ट्रकूट परिवार का शासन था।
- 757 ईस्वी की गुरुड मुहर वाले अंदरोली-चारोली शिलालेख में चार पीढ़ियों का उल्लेख है: करक I, उनके बेटे ध्रुव, उनके बेटे गोवदि, और उनके बेटे करक II, गुजरात में लता देश में मालखेड कड़ी की एक संपारश्वक शाखा से संबंधित हैं।
- लता (क्षेत्र) की पहचान उत्तर में माही नदी और दक्षिण में नर्मदा या तापी नदी के बीच के क्षेत्र के रूप में की जाती है। भूच एक प्रमुख शहर और इस क्षेत्र की पूर्व राजधानी है।

राष्ट्रकूटों के प्रमुख शासक कौन थे?

दन्तद्विर्ग:

- दन्तद्विर्ग राष्ट्रकूट साम्राज्य के संस्थापक थे जिन्होंने अपनी राजधानी मान्यखेत या आधुनिक शोलापुर के पास मालखेड में तय की थी।
- वह करक द्वितीय का समकालीन प्रतीक होता है।
- दन्तद्विर्ग ने पल्लवों की राजधानी कांची पर हमला किया और नंदीवरमन पल्लवमल्ल के साथ गठबंधन किया।
- दन्तद्विर्ग ने 753 ईस्वी में बृहत् चालुक्य साम्राज्य के बाहरी क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया और फिर साम्राज्य के मध्य क्षेत्र पर हमला किया एवं कीर्तविरमन को आसानी से हरा दिया।
- 754 ईस्वी के समांगध शिलालेख में दर्ज है कि दन्तद्विर्ग ने बादामी के अंतिम चालुक्य शासक कीर्तविरमन II को उखाड़ फेंका और पूर्ण शाही पद ग्रहण किया और खुद को इस रूप में वर्णित किया:
 - पृथ्वीवल्लभ,
 - महाराजाधिराज,
 - परमेश्वर, व
 - परमभट्टारक।
- दन्तद्विर्ग ने अपने क्षेत्र का वर्णन चार लाख गाँवों के रूप में किया है, जिसमें संभवतः बादामी के चालुक्य साम्राज्य के आधे से अधिक हिस्से पर उनका शासन शामिल था।
- दन्तद्विर्ग निःसंतान मर गया, जिसके कारण उसके चाचा कृष्णराज प्रथम और परिवार के अन्य सदस्यों के बीच विवाद हो गया।

कृष्णराज प्रथम:

- कृष्णराज प्रथम अपनी लोकप्रियता के कारण 756 ईस्वी में सहिसन पर कब्जा करने में सफल रहा।
- 772 ईस्वी के कृष्णराज प्रथम के भंडक शिलालेख में उनके लिये शुभतुंगा (समृद्धि में उच्च) और अकालवर्षा (लगातार वर्षा करने वाला) शब्द का

प्रयोग किया गया था।

- उसके अधीन सभी दशाओं में नव स्थापित राष्ट्रकूट साम्राज्य का विस्तार हुआ।
- उसने बादामी के चालुक्यों को उखाड़ फेंकने के साथ शुरुआत की।
- 772 ईस्वी की भंडक प्लेटें बताती हैं कि पूरा मध्य प्रदेश उसके शासन में आ गया था।
- दक्षिणी कोंकण को भी जीत लिया गया और कृष्णराज प्रथम ने उसे अपने अधीन कर लिया।
- उसने गंगा राज्य पर आधिपत्य स्थापित कर दक्षिण दिशा में अपने साम्राज्य का विस्तार भी किया।
- इस प्रकार कृष्णराज प्रथम के अधीन राष्ट्रकूट साम्राज्य पूरे आधुनिक महाराष्ट्र राज्य, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश का एक बड़ा हिस्सा, वेंगी के साथ पूर्व में अपना वर्चस्व बनाने और मध्य प्रदेश के एक बड़े हिस्से में विस्तारित होने के लिये लिया जाना जा सकता है।
- कृष्णराज। की मृत्यु 772 ईस्वी और 775 ईस्वी के बीच हुई और उसके बाद उनके बेटे गोवदि II ने सहिसन पर कब्जा किया।

गोवदि द्वितीय:

- गोवदि द्वितीय (774-780 ईस्वी) प्रभुतावर्ष (वपुल बारशि करने वाला) और वकिरमावलोक (एक वीर दखिने वाला व्यक्ति) की उपाधिधारण करते हैं।
- कुछ लेखों में उनका नाम भुला दिया गया या छोड़ दिया गया है।
- ऐसा उनके और उनके छोटे भाई धरुव के बीच नासकि और खानदेश के राज्यपाल के रूप में शासन करने के लिये गृहयुद्ध के कारण हुआ।
- भाइयों के बीच पहला युद्ध गोवदि द्वितीय के लिये वनिशकारी रूप से समाप्त हुआ।

धरुव:

- धरुव (780 - 793 CE) ने नमिन उपाधिधारण की:
 - नरुपमा (अप्रतमि)
 - काली-वल्लभ (युद्ध के शौकीन)
 - धारावर्षा (भारी वर्षा)
 - श्रीवल्लभ (भाग्यशाली)
- धरुव ने सहिसन हासिल करने के बाद गृहयुद्ध में गोवदि द्वितीय की सहायता करने वाले सभी राजाओं को कड़ी सजा दी।
- उन्होंने अपने जीवनकाल में अपने छोटे लेकिन योग्य पुत्र गोवदि तृतीय को राजा बनाया।

गोवदि III:

- गोवदि III (793-814 8 ईस्वी) सबसे महान राष्ट्रकूट शासकों में से एक बने, जिनके पास उपाधियाँ थी:
 - जगततुंगा (दुनिया में प्रमुख)
 - कीर्ति-नारायण (प्रसिद्धि के संबंध में वही नारायण)
 - जनवल्लभ (लोगों के प्रसिद्धिदा)
 - त्रिभुवनधवला (तीनों लोकों में शुद्ध)
 - प्रभुतावर्ष (प्रचुर मात्रा में वर्षा करने वाला)
 - श्रीवल्लभ
- उसने सबसे पहले दक्षिण में अपने बड़े भाइयों के विरोधों को कुचला।
- उत्तर में, कन्नौज के नागभट्ट के खिलाफ एक सफल अभियान और कोशल, कलिंग, वेंगी, दहला और ओडरका के साथ मालवा के वलिय के बाद, गोवदि III ने फरि से दक्षिण की ओर रुख किया।
- अपने पिता की अपेक्षाओं से बेहतर प्रदर्शन करते हुए उन्होंने कूटनीति और युद्ध के मैदान दोनों में अपने कौशल के माध्यम से राष्ट्रकूट साम्राज्य की प्रसिद्धि हिमालय से लेकर केंप कोमोरनि तक फैला दी।
- गोवदि के उत्तराधिकारी उनके इकलौते पुत्र महाराजा सर्व बने जिन्हें अमोघवर्ष प्रथम के नाम से जाना जाता है।

अमोघवर्ष प्रथम:

- अमोघवर्ष I (814-878 ईस्वी) ने अपने पिता की तरह खुद को राष्ट्रकूट राजाओं में सबसे महान साबित किया।
- उनके पास उपाधियाँ थी:
 - नृपतुंगा (राजाओं में श्रेष्ठ)
 - अतशियधवला (आचरण में आश्चर्यजनक रूप से श्वेत)
 - महाराजा-शंदा (महान राजाओं में सर्वश्रेष्ठ)
 - वीरा-नारायण (वीर नारायण)
- वह वास्तव में समकालीन भारत की धार्मिक परंपराओं में रुचिरखते थे और अपना समय जैन भिक्षुओं और आध्यात्मिक ध्यान के अन्य रूपों की संगति में व्यतीत करते थे।
- उनके शिलालेखों में उन्हें जैन धर्म के सबसे प्रमुख अनुयायियों में गिना जाता है।
- वे न केवल स्वयं लेखक थे बल्कि लेखकों के संरक्षक भी थे।
- आदिपुराण के लेखक, जनिसेना, अमोघवर्ष प्रथम के जैन आचार्यों में से थे।
- उन्होंने न केवल जैन धर्म बल्कि ब्राह्मणवादी धर्म का भी प्रचार किया और अपनी प्रजा के कल्याण के लिये कई अनुष्ठान भी किये।

- उनकी मृत्यु के बाद लगभग 879 ईस्वी में उनके पुत्र कृष्णा द्वितीय का राज्याभिक हुआ।

कृष्ण द्वितीय:

- कृष्ण द्वितीय (878-914 ईस्वी) के पास अकालवर्षा और शुभतुंगा की उपाधियाँ थीं।
- वह वदिरोहों को रोकने में पूरी तरह से सफल नहीं रहा।
- उनके शासनकाल की एकमात्र सफलता लता वायसरायल्टी की समाप्ति थी।
- वेंगी और चोलों के खिलाफ किये गए युद्धों में उन्हें कुछ समय के लिये आपदा, अपमान और नरिवासन के अलावा कुछ नहीं मिला।

इंद्र तृतीय:

- इंद्र तृतीय 915 ईस्वी में राजा बने। इंद्र III की उपाधियाँ थीं:
 - नतियवर्ष (लगातार बरसने वाला)
 - रत्तकंदरापा
 - कीर्तनारायण
 - राजमरथंडा
- अमोघवर्ष प्रथम के पौत्र इंद्र तृतीय ने साम्राज्य की पुनः स्थापना की।
- लता और मलावा के माध्यम से कालपी और कन्नौज तक राष्ट्रकूट सेना की उन्नति और महपिल की गद्दी, नसिंसंदेह, इंद्र की महत्वपूर्ण सैन्य उपलब्धियाँ थीं।
- 915 ईस्वी में महपिल की हार और कन्नौज की लूट के बाद, इंद्र III अपने समय का सबसे शक्तिशाली शासक था।
- इंद्र III का शासन 927 ईस्वी के अंत तक समाप्त होता है।
- उसके बाद उसका पुत्र अमोघवर्ष द्वितीय सहिसन पर बैठा और सलिहारा अपराजिता (997 ईस्वी) के भंडाना अनुदान के अनुसार एक वर्ष के लिये शासन किया।

कृष्ण तृतीय:

- कृष्ण तृतीय योग्य शासकों की कड़ी में अंतमि थे।
- कृष्णा III ने चोल राजा परांतक I (949 CE) को हराया, चोल साम्राज्य के उत्तरी भाग पर कब्जा कर लिया और चोल साम्राज्य को अपने सेवकों के बीच वितरित कर दिया।
- इसके बाद उन्होंने रामेश्वरम पर दबाव डाला और वहां एक वजिय स्तंभ स्थापित किया और एक मंदिर बनाया।
- उनकी मृत्यु के बाद 966 CE के अंत में या 967 CE के बहुत पहले उनके वरिधियों ने उनके उत्तराधिकारी सौतेले भाई खोटगिा के खिलाफ एकजुट हो गए। राष्ट्रकूट की राजधानी मान्यखेत को 972 ईस्वी में परमार राजाओं द्वारा लूटा और जला दिया गया था और सम्राट को मान्यखेत छोड़ने के लिये मजबूर किया गया था।

राष्ट्रकूट का प्रशासन किस प्रकार का था?

- राष्ट्रकूटों के योद्धा राजाओं ने दक्षिण भारत में एक विशाल साम्राज्य का निर्माण किया जो भारत के उत्तरी भागों को छू रहा था जिसमें लगभग साढ़े सात लाख गाँव शामिल थे।
- राष्ट्रकूटों ने न केवल जीतकर एक विशाल राज्य बनाया बल्कि इसे अच्छी तरह से बनाए रखा।

सम्राट और सामंत आधारित प्रशासन:

- एक शक्तिशाली राजतंत्र साम्राज्य का मूल था, जैसे बड़ी संख्या में सामंतों द्वारा सहायता प्रदान की जाती थी।
- दलिचस्प बात यह है कि प्रत्येक राष्ट्रकूट राजा के शासन की परिक्रमा के साथ यह क्षेत्र अधिक से अधिक सामंती होता जा रहा था।
- क्षेत्रों में प्रशासन की प्रणाली गुप्त साम्राज्य और उत्तर में हरष के राज्य और दक्कन में चालुक्यों के वचिरों और प्रथाओं पर आधारित थी।
- पूर्व की तरह सम्राट प्रशासन के प्रमुख और सशस्त्र बलों के कमांडर-इन-चीफ सहित सभी शक्तियों का स्रोत था।

कानून एवं व्यवस्था:

- राजा राज्य के भीतर कानून और व्यवस्था के रखरखाव के लिये जमिंदार था और अपने परिवार, मंत्रियों, जागीरदारों, सामंतों, अधिकारियों और चैंबरलेन से पूर्ण वफादारी और आज्ञाकारिता की अपेक्षा करता था।

वंशानुगत उत्तराधिकार की प्रणाली:

- राजा की स्थिति आमतौर पर वंशानुगत होती थी, लेकिन उत्तराधिकार के नियम कठोर रूप से नश्चित नहीं थे।
- ज्येष्ठ पुत्र प्रायः राज्य प्राप्त करने में सफल होता था लेकिन ऐसे कई उदाहरण थे जब ज्येष्ठ पुत्र को अपने छोटे भाइयों से युद्ध करना पड़ा और

कभी-कभी वह उनसे हार भी गया।

- इस प्रकार राष्ट्रकूट शासक ध्रुव और गोविंद चतुर्थ ने अपने बड़े भाइयों को अपदस्थ कर दिया।
- राजाओं को आमतौर पर प्रमुख परिवारों से उनके द्वारा चुने गए कई वंशानुगत मंत्रियों द्वारा सलाह और सहायता दी जाती थी।

महत्वपूर्ण प्रशासनिक पद:

- पुरालेख और साहित्यिक अभिलेखों से ऐसा प्रतीत होता है कि लगभग हर राज्य में एक मुख्यमंत्री, एक वदिश मंत्री, एक राजस्व मंत्री और कोषाध्यक्ष, सशस्त्र बलों के प्रमुख, मुख्य न्यायाधीश और पुरोहित होते थे।

प्रशासनिक क्षेत्र का विभाजन:

- राष्ट्रकूट साम्राज्य में सीधे प्रशासित क्षेत्रों को विभाजित किया गया था:
 - राष्ट्र (प्रांत)
 - विषय
 - भुक्ति

विभाजित क्षेत्र का प्रशासन:

- विषय विषयपति के अधीन एक आधुनिक ज़िले की तरह था और भुक्ति उससे छोटी इकाई थी।
- राष्ट्रकूट प्रशासन में प्रांतीय गवर्नरों और ज़िले स्तर के गवर्नरों को क्रमशः राष्ट्रमहत्तर और विषयमहत्तर नामक सहायकों का एक निकाय सहायता प्रदान करता था।
- इन छोटी इकाइयों और उनके प्रशासकों की भूमिकाएँ और शक्तियाँ स्पष्ट नहीं हैं।
- ऐसा लगता है कि उनका प्राथमिक उद्देश्य भू-राजस्व की वसूली और कानून व्यवस्था पर थोड़ा-बहुत ध्यान देना था।
- ऐसा प्रतीत होता है कि सभी अधिकारियों को लगान-मुक्त भूमिका अनुदान देकर भुगतान किया जाता था।
- ग्राम प्रशासन की मूल इकाई थी। गाँव का प्रशासन ग्राम प्रधान और ग्राम लेखाकार द्वारा चलाया जाता था, जिनके पद आमतौर पर वंशानुगत होते थे।
- उन्हें लगान मुक्त भूमिका अनुदान दिया जाता था।
- ग्राम-महाजन या ग्राम-महत्तरा कहे जाने वाले गाँव के बुजुर्ग द्वारा मुखिया को अक्सर अपने करतव्यों निभाने में मदद की जाती थी।
- राष्ट्रकूट साम्राज्य में, विशेष रूप से कर्नाटक में, स्थानीय स्कूलों, तालाबों, मंदिरों और सड़कों के प्रबंधन के लिये ग्राम समितियाँ थीं जो मुखिया के साथ घनिष्ठ रूप से सहयोग करती थीं और राजस्व संग्रह का एक विशेष प्रतिशत प्राप्त करती थीं।
- नगरों में भी ऐसी ही समितियाँ होती थीं, जिनमें व्यापारिक संघों के प्रमुख भी जुड़े होते थे।
- शहरों और उनके आसपास के क्षेत्रों में कानून और व्यवस्था कोषट-पाल या कोतवाल की ज़िम्मेदारी थी।
- कमज़ोर प्रधानता और बढ़े हुए वंशानुगत तत्वों ने ग्राम समितियों की शक्त को क्षीण कर दिया। केंद्रीय शासन के लिये भी उन पर अपना अधिकार जमाना और उन्हें नियंत्रित करना कठिन हो गया। तात्पर्य यह है कि सरकार सामंती होती जा रही थी।

राष्ट्रकूट की रक्षा पद्धति:

- अरब यात्रियों के इतिहास में वर्णित राष्ट्रकूट राजाओं के पास बड़ी और सुव्यवस्थित पैदल सेना, घुड़सवार सेना और बड़ी संख्या में युद्ध-हाथी थे।
- विशाल सशस्त्र बलों का सीधा संबंध राजा के वैभव और शक्ति से था, जो युद्धों के युग में साम्राज्य के रखरखाव और विस्तार के लिये भी आवश्यक था।
- राष्ट्रकूट अपनी सेना में बड़ी संख्या में अरब, पश्चिम एशिया और मध्य एशिया से आयातित घोड़ों के लिये प्रसिद्ध थे।
- राष्ट्रकूटों की वास्तविक शक्ति उनके कई कलाओं से परलक्षित होती है जो विशेष सैनिकों और स्वतंत्र कमांडरों द्वारा संरक्षित हैं।
- पैदल सेना में नियमित और अनियमित सैनिक और जागीरदार प्रमुखों द्वारा प्रदान की जाने वाली लेवी शामिल थी।
- नियमित सेना प्रायः वंशानुगत होते थे और कभी-कभी पूरे भारत के विभिन्न क्षेत्रों से लिये जाते थे।
- युद्ध में रथों का कोई संदर्भ नहीं है जो उपयोग से बाहर हो गए थे।

राष्ट्रकूट शासन के दौरान कला और वास्तुकला का विकास:

- राष्ट्रकूटों ने दक्कन की स्थापत्य विरासत में भारी योगदान दिया।
- महाराष्ट्र एलोरा और हाथी के शानदार रॉक-कट गुफा मंदिरों के माध्यम से कला और वास्तुकला में राष्ट्रकूट के योगदान को दर्शाता है।
- छठी शताब्दी में बनी 34 बौद्ध गुफाओं में एलोरा एक है। एलोरा में जैन मुनि भी नविस कर रहे थे।
- बौद्ध गुफाओं के जीर्णोद्धार के अलावा, राष्ट्रकूटों ने रॉक-कट मंदिरों के निर्माण का फैसला किया।
- अमोघवर्ष प्रथम ने जैन धर्म अपनाया, और एलोरा में पांच जैन गुफा मंदिर उनके शासनकाल के थे।
- एलोरा में एकात्मिक कैलासनाथ मंदिर राष्ट्रकूटों की सबसे शानदार और भव्य रचना है।
- मंदिर की दीवारें रावण, शिव और पार्वती सहित हिंदू पौराणिक कथाओं की शानदार मूर्तियों से सुशोभित हैं।

कैलासनाथ मंदिर:

- कैलासनाथ मंदिर भारत के महाराष्ट्र में एलोरा की गुफाओं में रॉक-कट हट्टी मंदिरों में सबसे बड़ा है।
- दक्षिण से दक्षिण भारत में राष्ट्रकूट शासन के वसतिार के बाद, राजा कृष्ण प्रथम ने कैलासनाथ मंदिर परियोजना शुरू की। कर्नाटक दरवडि की स्थापत्य शैली को अपनाया गया है।
- मुख्य मंदिर, एक प्रवेश द्वार, नंदी मंडप, और चारों ओर से घेरे हुए प्रांगण के साथ एक प्रांगण मंदिर के चार प्रमुख घटक हैं।
- कैलाश मंदिर अपनी अद्भुत मूर्तियों के साथ वास्तुशिल्प का एक आश्चर्य है। यह मूर्तिभेंस के रूप में राक्षस को देवी दुर्गा द्वारा मारे जाने को प्रदर्शति करती है।
- रावण एक अन्य मूर्तिमें शवि के घर कैलाश पर्वत को स्थानांतरति करने का प्रयास कर रहा था। दीवारें भी रामायण के चर्ितों से आच्छादति थीं। कैलाश मंदिर पर दरवडि का प्रभुत्व अधिक है।

एलफिंटा की गुफाएँ:

- एलफिंटा की गुफाएँ एक द्वीप पर स्थति हैं, जसि मुंबई के पास शरीपुरी (इसे पहले शरीपुरी नाम दिया गया था, लेकनि नविासी इसे घारापुरी कहते थे) के नाम से जाना जाता है।
- इसे बाद में बनाए गए हाथी की बड़ी मूर्ति के नाम पर रखा गया था।
- एलोरा की गुफाओं और एलफिंटा की गुफाओं में कई समानताएँ हैं जो कारीगरों की नरितरता को प्रदर्शति करती हैं।
- एलफिंटा गुफाओं के प्रवेश द्वार में वशाल द्वार-पालक मूर्तियाँ हैं।
- गर्भगृह के चारों ओर प्राकार को घेरने वाली दीवार पर नटराज, गंगाधर, अर्धनारीश्वर, सोमस्कंद और त्रिमूर्ति की मूर्तियाँ हैं।

नवलगि मंदिर:

- अमोघवर्ष प्रथम या उनके पुत्र कृष्ण द्वलतीय, जो राष्ट्रकूट राजवंश के एक शासक थे, ने नौवीं शताब्दी में नवलगि मंदिर परसिर का नरिमाण कथिा था।
- कुक्कनूर शहर में यह मंदिर स्थति है। यह भारतीय राज्य कर्नाटक के कोप्ल ज़िले में, इटागी के उत्तर में और गदग के पूर्व में स्थति है।
- दक्षिण भारत में नौ मंदिर समूह दरवडि स्थापत्य शैली में बनाए गए थे। इसका नाम, नवलगि, लगि की उपस्थति से पड़ा है, जो हट्टी धर्म में शवि का सामान्य प्रतनिधित्व करता है।